



प्रयाग स्नान विधि ।

जिसमें

प्रयाग माहात्म्य स्नान विधि और पार्थिवार्चन विधि वर्णित है

जिसको

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्रीस्वामी शङ्कराचार्य्य
जी महाराज संस्थापित शृङ्गेरी मठके सदाचारानुयायी
सर्वगुण संपन्न धर्म्म मूर्त्ति दानियों में अग्रणी
श्री जगन्नाथ चैतन्य ब्रह्मचारी जी के चरणार
विन्दानुरागी अष्टांग योग में कुशल
श्री सदाशिव नारायण ब्रह्मचारी
जी ने रचना किया

प० विश्वम्भर दत्त जी ने अपने मित्रों की सहायता
से प्रयागराज में छपवाकर प्रकाश किया

पं० अमरनाथ शर्म्मा के प्रबन्ध से एडवर्ड प्रेस
इलाहाबाद में मुद्रित हुई

विक्रम सम्बत १९६२

भूमिका ।

विदित होकि यह श्री तीर्थराजप्रयाग सब तीर्थों का राज और प्राचीन तीर्थ हैं "पंचक्रोशात्मकंक्षेत्र" पांच कोश के प्रमाण में यह क्षेत्र है। जिस का महात्म्य सहस्रमुख फणीन्द्र श्रीशेष जी श्रीगङ्गातट बासुकी नाग का (नागबासू) जो स्थान है वहां सनकादि ऋषियों के प्रति कहा है वह महात्म्य पद्मपुराणान्तर्गत शत (१००) अध्याय में है उस श्री तीर्थराज को स्मरण करके लोकोपकारार्थ संक्षेप में प्रयोजन मात्र सूचनाके वास्ते स्नान दान, क्षौरादिका महात्म और मन्त्र सहित स्नान विधि लिखता हूं ॥

इस प्रयागराज में अन्तर्वेदी मध्यवेदी और बहिर्वेदी नाम करके तीन वेदी बीस कोश के मण्डल में है यहां यज्ञ करने का बड़ा महात्म है और कुण्डादि का न्यूनाधिक्य दोष नहीं होता। यहां मोक्षप्रद त्रिवेणी अर्थात् गङ्गा यमुना, सरस्वती, का सङ्गम है। जिसको योगी लोग अत्यन्त परिश्रम से गुरूपदिष्ट द्वारा प्राण अपान को एक कर सुषुम्नानाड़ी के आश्रित हो मेरु दण्ड द्वारा आधारादि चक्रों को भेदन करते हुए आज्ञाचक्र अर्थात् भ्रू मध्य में जहां इडा रूपी गङ्गा, पिङ्गला रूपी यमुना और सुषुम्ना रूपी सरस्वती का संगम है वहां प्राप्त हो इस संगम में स्नान करते हैं जैसा योग शास्त्र में कहा है "गङ्गायमुनयोर्मध्येवहत्येषा-सरस्वती । तासान्तु सङ्गमेस्नात्वा धन्योयातिपरां गतिम्" भवार्थ गंगा यमुना के मध्य में सरस्वती का प्रवाह है इस त्रिवेणी संगम में स्नान करने से मनुष्य परम गति (मोक्ष) को प्राप्त होता है "सितासिते सङ्गमेयोम-नसास्नानमाचरेत्। सर्वपापविनिर्मुक्तोयाति ब्रह्मसनातनम्" भवार्थ इस इडा पिंगला के संगम में (श्वेत श्यामधारा का संगम) मानसिक स्नान करने से साधक सब पाप से मुक्त होकेसनातन ब्रह्म में लय होजाता है ॥

अभिप्राय यह हैं कि जिस स्थल को योगी लोग अत्यन्त कष्ट से का-लान्तर में प्राप्त हो मुक्त हो जाते हैं वह श्री तीर्थराज में त्रिवेणी का संगम प्रत्यक्ष में विद्यमान है श्रुतिः "सितासिते सरिते यत्रसंगते तत्राप्लु तासो दिवमुत्पतन्ति । येवैतन्वा विसृजन्ति धीरास्तेजनासो अमृतत्वं भजन्ते" श्वेत और श्याम धारा की दो नदियां जहां पर संगम भई हैं वहां स्नान करने वाले स्वर्ग को जाते हैं और जो यहां शरीर त्यागते हैं वे मोक्ष पाते हैं ॥ इससे उचित है कि ऐसे अलभ्य लाभ को प्राप्त होकर स्नान सविधि अवश्य करना चाहिये क्योंकि "अत्रयोनगतिंप्राप्तोगतिस्तस्य न कुत्रचित" जिसकी गति इस तीर्थराज में न हुई उसकी गति कहीं नहीं हो सकती ॥ छापे खाने के दोष से इसमें जहां कहीं अशुद्ध समझ जाय उसको सज्जन लोग कृपाकर सुधार लेंगे ॥

योगाभिलाषी श्री सदाशिवनारायण चैतन्य ब्रह्मचारी

बलुवाघाट—प्रयाग

ॐ



श्री गणेशायनमः ।

श्री प्रयाग राज स्नान बिधिः ।

श्री परब्रह्मपरमात्मनेशिवाय गुरवेनमः ।

मंगला चरणम् ।

नत्वा बिष्णुपदीं कलिन्दतनयां वाणीं महद्गोचरां बेणी-माधव मीडितञ्च निखिलै स्तीर्थैर्विमुक्तिप्रदम् । लोकानां प्रमुदेतथाक्षयवटंगीर्वाण संसेवितं वक्ष्येस्नान बिधिं दिनेशसुतया जन्होस्सुतासंगमे ॥

तीर्थराजस्तुतिः

गंगायैयमुनायै च सरस्वत्यैवटाय च । सोमेश्वराय शेषाय माधवाय नमोनमः ॥ १ नमोबेण्यै नमोबेण्यै नमोबेण्यै नमोनमः । माधवायनमस्तुभ्यंफलदायनमो नमोनमः ॥ २ ॥ त्रिवेणी माधवं सोमं भरद्वाजं चवासुकिं । वन्देऽक्षयवटं शेषंप्रयागं तीर्थनायकम् ॥ ३ ॥

तीर्थमाहात्म्यं ।

तिस्रःकोट्योर्द्ध कोटी दिवि भुविसुतलेसन्ति तीर्थानितेषां राजा मुख्यः प्रयागः सजयति जगतांभुक्तिमुक्तिप्रदाता अक्षेयं छत्रमेतत् वटविटपिनिभं चामरे श्वेत नीले गंगे वाग्बादिनीसाकलयति च ततः को वदान्योस्तिमान्यः ॥ १ ॥

स्वर्ग लोक, भूलोक, और पाताल लोक में साढ़ेतीन करोड़ तीर्थ हैं तिन सबों के श्रेष्ठ राजा प्रयाग राज हैं संसारी सुख, स्वर्ग सुख और मुक्ति के देनेवाले है सो ऐसे तीर्थ राज की जै जै कार हो जिस प्रयाग राज में अक्षयबट छत्र है और श्वेत गंगा की धारा श्याम यमुना की धारा ये दोनें ओर (तरफ) चमर ढुर रहे हैं बीच में सरस्वती स्तुति (बंदना) करती है ऐसे प्रयाग राज से दूसरा कौन माननीय और दानी (दाता) है अर्थात कोई नहीं ॥

अभिप्राय यह है कि इस तीर्थ के समान कोई तीर्थ त्रैलोक्य में नहीं है यहां जन्म जन्मान्तर का पाप केवल क्षौर कराने से ही नष्ट हो जाता है तब स्नान दानादि की क्या कथा और अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारों पदार्थ सेवा करने से प्राप्त हो सकता है क्योंकि दानी है अर्थात् जो यहां अक्षयबट है कि जिसका नाश कभी नहीं होता और कल्पान्त में भगवान अंगुष्ठ रूप धारण कर इसी वृक्ष के पत्ते पर शयन करते हैं जैसा "पुराकल्पापायेभगवति शयाने बटपुटे" वह अक्षयबट अविनाशी, आदि-पुरुष श्री सदा शिव रूप है ॥

अन्तर्वेदीश्च मध्यवेदी वहिर्वेदीतिसा त्रिधा । काम कल्प लतारूपा भक्तानां स्वनिवासिनां ॥ २ ॥ षट् कूलमादिमंक्षेत्रं वेणीसंज्ञं बिनिश्चितं । सार्द्धयोजनमात्रं तत्परिखा वेष्टना कृतिः ॥ ३ ॥

श्री प्रयाग राज में अन्तर्वेदीश्च मध्य वेदी और वहिर्वेदी इस प्रकार तीन वेदी हैं ये तीनों भक्तों को जो निवास करते हैं उनको कल्प वृक्ष के समान मनोर्थ के देनेवाली है जो छः किनारा (कूल तट) है वह षट् कूल वेणी संज्ञक है सो चारों ओर छः कोश तक खाई (पनाह) के घेर के समान है अर्थात् दो गंगा का किनारा, दो यमुना का किनारा और दो जो दोनें मिल कर आगे को गई सोमेश्वर की ओर (तरफ) ऐसा

यह छः किनारा षट्कूल कहा जाता है ऐसा पृथ्वी मात्र भर में कहीं नहीं है ॥

पञ्चकुण्डानि राजेन्द्र येषांमध्येतु जान्हवी । प्रयाग दर्शना देव पापं नश्यति तत्क्षणात् ॥ ४ ॥ यावन्ति सन्ति तीर्थानि तावत्कोवक्तु मर्हसि । कथितुंनैव शक्यंते राजन् वर्ष शतै रपि ॥ ५ ॥

हे राजा इस प्रयाग में पाच कुण्ड हैं जिसके मध्य में गंगा जी हैं ऐसे प्रयाग राज के दर्शन से ही पाप नष्ट हो जाता है । इस प्रयाग में जितने तीर्थ हैं उनको कौन गिनाय सकता है अर्थात् सौ बर्ष तक कहे तो भी न गिन सके ॥

अप्रयाग प्रतिष्ठानाद्यत्पुरो वासुकेर्गृहात् । कम्वलाश्वतरौ नागौ नागश्चवहुमूलकः । ६ । एतत्प्रजापतेः क्षेत्रं त्रिषुलोकेषु बिश्रुतं । अत्रस्नानाद्दिवंयान्तियेमृतास्ते तुमोक्षगाः । ७ ।

प्रयाग से झूंसी तक और नाग बासू (दारागंज में हैं) से कलम्बे अश्वतर नाग (यमुना पार में है) तक इतना प्रजा पति क्षेत्र है जो कि तीनों लोक में बिख्यात है इस जगह स्नान करने से स्वर्ग को जाता है और मरने पर मोक्ष को प्राप्त होता है ॥

प्रयाग मण्डलगतायावन्तः सिकताकणाः । तावत्तीर्थानिसेवन्ते लिंगदेहे न माधवम् ॥ ८ ॥

श्री प्रयाग राज मण्डल के मध्य में जितना बालू (रेती) कणिका है उतने तीर्थ देहधारी होकर श्री माधव जी की सेवा करते हैं ।

पञ्चयोजनविस्तीर्णम्प्रयागस्य तुमण्डलं । प्रविष्टस्यैवतद्भूमावश्वमेधः पदे पदे ॥ ९ ॥

प्रयाग राज का मण्डल पांच योजन [बीस कोस] के बिस्तार में है उस भूमि में प्रवेश करने वाले को पग २ में अश्वमेध्य यज्ञ का फल होता है ॥

सिताऽसिते सरिच्छ्रेष्टे यत्रासातेसुदुर्लभे । तत्राप्लुतानां जन्तूनां कैवल्यं कोत्रसंशयः ॥ १० ॥

जिस प्रयाग राज में सुंदर दुर्लभ नदियों में श्रेष्ठ श्वेत कृष्ण जल वाली गंगा यमुना बिराजमान हैं वहां स्नान करने वाले जनों को मोक्ष होने में क्या सन्देह है ॥

सार्द्धं त्रिकोटि तीर्थानि त्रिविष्टप निवासिनां । राजा बिराजमानत्वात् तीर्थराज इति स्मृतः ॥ ११ ॥

देवताओं के साढ़े तीन करोड़ तीर्थ हैं तिन सबों के राजा श्री प्रयाग राजही हैं इस से इनका नाम तीर्थराज है ॥

प्रयागाभिमुखोभूत्वा पदमेकमपिद्विजाः । प्रयातिसंस्मरन्नेनंसर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १२ ॥

हे ब्राह्मणों जो मनुष्य प्रयागराज को स्मरण करता हुआ एक पग भी उनकी ओर चलता है वह सब पापों से छूट जाता है ॥

ब्रह्महत्यादिपापानि जन्म जन्म कृतान्यपि । दर्शनादेवनश्यंतितीर्थराजस्य तत्क्षणात् ॥ १३ ॥

जन्म जन्मान्तर के किये हुये ब्रह्महत्या आदिक पाप तीर्थ राज के दर्शन से तत्काल ही नष्ट होते हैं ॥

धनुस्त्रिंशत्तुविस्तीर्णः सितनीलाम्बुसंगमः । तान्तुवेणी विजानीयात्पिण्ड ब्रह्माण्ड चारिणी ॥ १४ ॥

तीस धनुष (१२० हाथ) के फैलाव में गंगा यमुना के संगम का प्रमाण है वही वेणी कही जाती हैं जो ब्रह्माण्ड रूपी पिण्ड में व्याप्त है।

अक्षयवटसंलग्ना मूलवेणीप्रकीर्तिता । मध्यवेणीद्वयोर्धारा प्रान्त्यासोमेश्वरावधिः ॥ १५ ॥

अक्षयवट से लगी हुई का मूल वेणी नाम है और जो दोनों की धारा प्रत्यक्ष देखने में आती है उसका मध्य वेणी नाम है और मिल कर के सोमेश्वर तक जो जल का प्रवाह है वह अंत वेणी कही जाती हैं।

ॐ ॐ मित्येकाक्षरंब्रह्मपरं ब्रह्माभिधायकं । तदेव वेणी विज्ञेयानपृथग्भावमाचरेत् ॥ १६ ॥

ओम् यह जो एकाक्षर ब्रह्म है परब्रह्म का मुख्य नाम उसी को वेणी जानना चाहिये उस से भिन्न नहीं है अर्थात् यह त्रिवेणी ब्रह्म रूपिणी हैं ॥

वेदमातातुसावित्री त्रिपदा च चतुष्पदा । सएवतीर्थराजो-
वैत्रिवेण्यां यत्रसंगमः ॥ १७ ॥

त्रिपदा वा चतुष्पदा जो वेद माता गायत्री है वही तीर्थराज है जहां त्रिवेणी का संगम है ॥

ज्ञानसिद्धिकरी वेणी मोक्षसिद्धिकरीश्वरी । सर्वसंपत्करी
देवी त्रिवेणी सेव्यतांसदा ॥ १८ ॥

ज्ञान सिद्धि की करने वाली, मोक्ष सिद्धि की करदेने वाली, संपूर्ण सम्पतके करने वाली ईश्वरी त्रिवेणी है ॥

नवेणीसदृशी काशी न वेणीसदृशी गया । न वेणी सदृशी
शक्तिस्तीर्थेन्य त्रास्तिकुत्रचित् ॥ १९ ॥

वेणी के समान न काशी है न गया है और न अन्य तीर्थ में ऐसी शक्ति है ॥

स्नानेन्मुण्डनेनात्र सर्वपाप क्षयोयतः । सप्तधातुमये देहे
यानिपापानिसन्तिवै ॥ केशेषुतानि सर्वाणियत्रनश्यंति मुंड-
नात् ॥ २० ॥

इस प्रयागराज में स्नान और मुण्डन सेही सब पापों का क्षय होता है क्योंकि सप्त धातु अर्थात् रस, रुधिर, मांस, मेदा, हड्डी, मज्जा, और वीर्य हैं जिसमें । ऐसे देह में जितने पाप हैं वे सब केशों में ही आय जाते हैं उनके मुण्डन होते ही नष्ट हो जाते हैं परन्तु 'कक्षो पस्थशिखां वर्ज्यंसकृदेवानु लोमतः" बगल के बार, उपस्थ के बार, और शिखा (चुटैया) को छोड़ शेष सर्वाङ्ग क्षौर करावे ॥

किंगयापिण्डदानेन काश्याम्वा मरणेन किम् । किंकुरु-
क्षेत्रदाने न प्रयागे वपनंयदि ॥ २१

यदि प्रयाग राज में मुंडन करावे तो गया में पिंडदान से, काशी में मरने से, और कुरुक्षेत्र में दान देने से क्या प्रयोजन है ? । अर्थात् प्रयाग राज में जो मुण्डन कराने का फल है उसके बराबर दूसरे तीर्थ का पुण्य दान आदि कुछ भी नहीं (स्वल्प) है ॥

वालो वाथयुवा वापि वृद्धो वा स्त्री सभर्तृका । गर्भिणी
पतिहीना वा प्रयागे वपनाच्छुचिः ॥ २२ ॥

बालक, युवा (जवान) बूढ़ा, सौभाग्यवती स्त्री, गर्भिणी स्त्री अथवा बिधवा स्त्री, भी प्रयागराज में मुण्डन कराने से ही पवित्र होते हैं॥

देवो वा दानवो वाथ मूर्खो वा वेद निंदकः। प्रयागे वपनाद्देवसद्यः पापैः प्रमुच्यते॥ २३॥

देवता, दानव, मूर्ख, और वेद निंदक प्रयाग में मुण्डन कराने से शीघ्रही सब पापों से छूट जाते हैं॥

तीर्थराजंसमासाद्य मुण्डनं येनकारयेत्। सकोटि कुल संयुक्तो रौरवं नरकम्ब्रजेत्॥ २४॥

जो कोई प्रयाग राज में जाकर मुण्डन नहीं कराता वह करोड़ों पुरुषों सहित रौरव नाम नरक में जाता है

गोभूतिलहिरण्याज्यं वासो धान्यं गुडंतथा। रजतंलवणं चेति दशदानान्यनुक्रमात्॥ १८ पत्रं पुष्पं फलंतोयं यद्भक्त्या दीयतेजनैः। सुमेरुसदृशं भूत्वातदनंत्याय कल्प्यते॥ २५

स्नान के अनंतर दश प्रकार का दान वित्तानुसार देना चाहिये यथा गो दान १ पृथ्वी २ तिल ३ सोना ४ घी ५ कपड़ा ६ अन्न ७ गुड़ ८ चांदी ९ नोन१० ये दान देवै॥ पत्र, फल, फूल, जल, जो मनुष्य भक्ति पूर्वक्से देते हैं वह फूल सुमेरु पर्वत के बराबर होके अनंत होजाता है॥

अत्रदानं यथा शक्त्या य आन्व रतिधर्मवान्। अन्यत्र दानाल्लक्ष घ्नं पुण्यं प्राप्नोति मानवः॥ अल्प दान फलं चात्रबर्द्धते वटवीजवत्॥ २६॥

जो धर्मवान पुरुष इस प्रयाग राज में वित्ता नुसार दान देते हैं उन पुरुषों को अन्य (दूसरे) तीर्थों से लक्ष गुणा पुण्य प्राप्त होता है थोड़ा भी दान वट (बरगद बड़) बीज के समान बढ़ता है॥

मतिर्नोत्पद्यते पुंसां प्रयागे दानकर्मणि। प्राची नानिच पापानि बुद्धिभेदंनयंतिहि॥ २७

परंतु प्रयाग में मनुष्यों की बुद्धिदान देने में नहीं उत्पन्नहोती क्योंकि जन्मांतरों के पाप बुद्धि को फेर देता है इसी से दान करने की इच्छा नहीं होती॥

अन्नदासुखिनोनित्यं बस्त्रदश्चैव रूपवान् । सनरः सर्वदो भूपः योददाति वसुंधरां ॥ २८ ॥

अन्न का देनेवाला सदा सुखी, बस्त्र का देने वाला रूपवान होता है और वह मनुष्य सदैव राजा होता है जो पृथ्वी को देता है ॥

प्रयाग बासी सकल त्रवासी संसार बासी सचदेव वासी। कैलाश बासी संबिमान बासी बैकुंठबासी नच पाप बासी ॥ २९ ॥

जो जो प्रयाग राज में कल्प बास करता है वही पुरुष स्त्री सुख पाता है, वही स्वर्ग वासी होता है, वही कैलाश बासी होता है वही बिमानों पर चढ़ के सब लोकों में घूमता है, वही बैकुंठ बासी होता है परंतु पाप बासी अर्थात् नरक में नहीं जाता ॥

प्रयागेभैक्ष्यवृत्यावा तिष्ठते दृढ़भक्तिमान् । जीवन्मुक्तः सएवेहकृतकृत्यो न संशयः ॥ ३० ॥

जो प्राणी प्रयाग में भिक्षा मांग कर खाता हुआ दृढ़भक्ति से रहता है वह जीता हुआ मुक्त और कृतार्थ है ॥

तीर्थस्य ब्रह्मणा भोज्या तीर्थश्राद्धे विशेषतः । सगुणा निर्गुणा वापि एकं वापंक्ति पावनं ॥ ३१ ॥

तीर्थ श्राद्धमें तीर्थ ब्राह्मणों को अवश्य भोजन करावे चाहे पंडित हो अथवा मूर्ख हो क्योंकि एक भी तीर्थ का ब्राह्मण पांत को शुद्ध करता है अभिप्राय यह है कि चाहे यजमान लक्षन ब्राह्मण भोजन करावै परंतु तीर्थ के ब्राह्मण को न भोजन कराने से तीर्थ राज की प्रसन्नता नहीं होती ॥

येषुतीर्थेषु येदेवा येषुतीर्थेषु येद्विजाः। येषुतीर्थे षुया आपो विचिकित्से ब्नतत्क्वचित् ॥ देयमाच्छादनं श्राद्धेऽन्यथा नग्नंतदुच्यते ॥ ३२ ॥

जिस तीर्थ में जो देवता हों और जिस तीर्थ में जैसे जो ब्राह्मण हों और जिन तीर्थों में जैसे जल हों इनमें कभी संदेह न करना चाहिये अर्थात् जैसे हों वैसेही श्रेष्ठ हैं। श्राद्ध में कोई बस्त्र अवश्य देना चाहिये न हों तो श्राद्ध नग्न रहता है।

आवाहनंबिसर्गश्चद्विजांगुष्टनिवेशनं । अर्घ्यं बिकिर दानं चदिग्बंधोग्नि कृतिस्तथा ॥ ३३ ॥

तृप्तिप्रस्नश्च दिग्दोषः परिविष्टान्नरक्षणं । एतैर्विरहितं कार्यं तीर्थे श्राद्ध मुनीश्वरः ॥ ३४ ॥

तीर्थ श्राद्ध में इतने कर्म न करना चाहिये आवाहन, विसर्जन, मधु आदि में अंगुष्टा (अंगूठा) छुआना अर्घ्य, बिकिरा का पिण्ड, दिशा रक्षा वेदी पर अंगार का घुमाना, तृप्ति पूंछना, दिशा दोष, और बिथरे हुए अन्न की रक्षा न करनी चाहिये ॥ प्रयाग में श्राद्ध करने से पितरों को अक्षय पद प्राप्त होता है ॥

सतपस्वी समनस्वीसयशस्वी नरोत्तमः । भोगीसएवयो गीशोयः प्रयागेतनुंत्यजेत् ॥ ३५ ॥

वही तप करने वाला है, वही मन का जीतने वाला है, वही यशी है, वही नरों में श्रेष्ठ है वही भोगी और वही योगी है जो प्रयाग में शरीर को छोड़ता है ॥

देहत्यागंतुयेवीरा वेण्यांमाधवसन्निधौ । कुर्वंति माधव तनुंविशंत्यपुनरागमं ॥ ३६ ॥

जो बीर पुरुष वेणी माधव के समीप में देह को त्यागते हैं वे श्री वेणी माधव के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं फिर जन्म नहींलेते ॥

पुर्योपिसप्तबिख्याता स्तीर्थान्यन्यानियानिच । मुक्तिंदातुं नतेशक्तास्तीर्थराजाज्ञयाबिना ॥ ३७ ॥

सात पुरी अर्थात् अयोध्या १ मथुरा २ हरद्वार ३ काशी ४ कांची ५ उज्जैन ६ और द्वारिका ये जो मोक्ष के दाता हैं वा और अन्य (दूसरे) भी जो तीर्थ वे बिना तीर्थराज की आज्ञा मुक्ति नही देसकते ॥

अन्यक्षेत्र कृतंपापंप्रयागेतत्विनश्यति । प्रयागेयत्कृतंपापं बज्रलेपोभविष्यति ॥ ३८ ॥

अन्य तीर्थ का किया पाप तो प्रयाग में स्नानादिक के करने से नष्ट होजाता है परंतु प्रयाग राज में जो पाप किया गया वह बज्रलेप होजाता है अर्थात् कभी नहीं छूटता । इस से लोगों को उचित है कि पाप से बहुत डरें अर्थात् पाप (विश्वासघात, किसी की जीविका हर

लेना, पर स्त्री रमण, जुआखेलना, एक दूसरे में द्रोह लगाना, जीव की हिंसा, माता पिता को दुःख देना, चोरी करना, गुरू से द्रोह, महात्मा से बैर, आदि को न करैं ॥

श्री कामो बिल्वपत्रैश्चशांति कामस्तुदूर्वया । आयुःकामः सदाकुर्याच्चंपकैः पूजनंहरेः ॥ ३९ विद्याकामस्तुकुर्वीताऽत-सिकाकुसुमैर्नवैः । बिष्णुप्रसादकामस्तु तुलसीमंजरीद-लैः॥४० पुत्रकामश्चरेत्पूजांमल्लिकाद्यैःशुभैःशुभैः । दुःखप्र-शमकामस्तु पूजयेत्कुंद पुष्पकैः ॥ ४१

श्री माधव भगवान का पूजन कामना वालों को इस प्रकार करना चाहिये—धन की इच्छा वाला बिल्वपत्र चढ़ावे, शान्ति काम के वास्ते दूध, आयुष्य के वास्ते चंपा का फूल, प्रीति के वास्ते अलसी का फूल बिष्णु के प्रीति के वास्ते मंजरी सहित तुलसीदल, पुत्र कामना के वास्ते मल्लिका (नेवारी) आदि सुन्दर२ फूल, दुःख शोक निवारण के वास्ते कुंद का फूल, चढ़ावे । प्रथम भगवान का ध्यान करके षोड़शोपचार पूजन करे अनंतर कामना के वास्ते उक्त द्रव्य सवालक्ष वा अधिक प्रमाण से चढ़ावे अनन्तर प्रदक्षिणा साष्टांग नमस्कार कर पूर्ण करे तो कामिकों का मनोर्थ अवश्य सिद्ध हो । परंतु जब संख्या पूरी हो जाय तो हवन भी सविधि करना चाहिये और बिल्वपत्रादि जो चढ़ाया हो उसको सुवर्ण (सोना) वा चांदी का बनवा कर पूजन कर हवनांत में आचार्य को देवे जैसा कहा है॥

सौवर्णं बिल्वपत्रं स्याद्बिल्वपत्रप्रपूजने । अशक्तौसर्वतो रौप्यं वित्तशाठ्यं न कारयेत् ॥

बिल्व पत्र से पूजन करने वाला पूजनांत में सोने का बेलपत्र दान करे असामर्थ में चांदी ही का चढ़ावे परंतु सामर्थ से कम न करे ऐसे ही तुलसी आदि में भी जानना ॥

माघमासे यथाशक्त्या दीपमालां कृतानृणां । बैकुंठभवने वासोजायते बहु बासरं ॥ ४२ ॥

माघ के महीने में जो मनुष्य यथाशक्ति दीपदान करता है वह बहुत काल पर्यंत बैकुंठ में बास करता है । और कार्तिक, बैशाख में भी ऐसा ही माहात्म है ॥ घृत का दीपदान उत्तम और तिल के तेल का

मध्यम है। लक्ष वा सवालक्ष जो कोई संकल्प करके चढ़ावे तो उसको हवन करना चाहिये और [illegible] में सोने की बत्ती का दान करना चाहिये। "सुवर्णवर्ति संयु[illegible]चार्यायमिवेदयेत्"

अत्राऽभिषेकंयःकुर्यात्संगमे लोक विश्रुते। रुद्राऽध्याये न सूक्तैर्वातल्लिंगैः पावमानकैः॥ ४३॥ स्वयम्बाब्राह्मण द्वारा ह्यभिषेकंसमाचरेत्। स्वल्पे नाप्यभिषेके न महत्फलम वाप्नुयात्॥ ४४॥

इस तीर्थराज के संगम में जो कोई स्वयं या ब्राह्मण द्वारा रुद्राध्यायी वा पवमानसूक्त से अभिषेक थोड़ा भी करता है तो वह बिशेष ही फल को पाता है॥

दंपतीपूजनं कुर्याद्यथाशक्ति यथाविधि। वेणीमाधव तोषार्थं माघमासे बिशेषतः॥ ४५॥ यानारीपुजयेद्भक्त्या प्रयागे दम्पतीतुसा सौभा[illegible]ैश्वर्यपुत्रादि लब्ध्वाति-माधवप्रिया॥ ४६॥

दंपती पूजन अर्थात् स्त्री पुरुष का पूजन बि[illegible]नुसार सबिधि वेणी माधव के प्रसन्नार्थ माघ महीने में अवश्य करे। जो स्त्री भक्ति से प्रयाग में दंपती का पूजन करती है वह सौभाग्य युक्त धन पुत्रादि का लाभ श्री माधव जी की कृपा से पाती है। यहां वेणी दान का माहात्म बहुत है परंतु वेणी दान में मास का नियम नहीं है चाहे जब करे।

माघेमासियतिभ्योवैभिक्षादानं करोतियः। सोऽनंतफलमाप्नोति बिष्णुरूपायतेहिते॥ ४७॥

माघ के महीने में जो सन्यासी को भिक्षा (भोजन) देता है वह असंख्य फल पाता है क्योंकि सन्यासी विष्णु के रूप ही होते हैं॥

पश्चिमाभिमुखी गंगाकालिंद्या सहसंगता। हंतिकल्प कृतं पापंसमावेत्वतिदुर्लभा॥ ४८॥

पश्चिम वाहिनी गंगा, यमुना के सहित अर्थात् गंगा जी की धारा जो दक्षिण को चल रही है वह पश्चिम हो के गमन करे तो उसमें स्नान करने से कल्पांतरों का पाप नष्ट होता है परंतु वह माघ में दुर्लभ है।

गंगायमुनसंगेतु माघस्नानभवंफलं । अगण्यंब्रह्मणाप्रोक्तं त्रैलोक्ये तावुसंनहि ॥ ४९ ॥

माघ के महीने में गङ्गा यमुना के संगम में स्नान करने से जो फल प्राप्त होता है उसके पुण्य को ब्रह्मा ने असंख्य कहा है अर्थात त्रैलोक्य में उसके पुण्य के बराबर कुछ नहीं है ॥

किंतीर्थैःसेवितैरन्यैर्बह्वायासफलप्रदैः। त्रिवेणीसेव्यतांसर्वै-र्धर्म कामार्थमोक्षदा ॥ ५० ॥

बहुत सी आशा करके दूसरे तीर्थ की क्यों सेवा करे क्योंकि धर्म, काम अर्थ, मोक्ष चारों पदार्थ के देनेवाली तो त्रिवेणी है इस से इन्ही की सेवा करना चाहिये ॥

दृष्ट्वाजन्मशतंपापंस्नात्वा जन्मशतद्वयम् । पीत्वा जन्म सहस्राणिहन्ति गंगा कलौयुगे ॥ ५१ ॥

कलि में श्री गंगा जी के देखने से सौ जन्म के पाप नाश होते हैं स्नान करने से दोसौ जन्म के पाप नाश होते हैं और पीने से हजार जन्म के पाप नाश होता है। और जो लोग नित्य गृह में रखकर गंगाजल पीते हैं और उक्त कथन पर प्रीति है तो वो अवश्य सब पापों से निवृत होकर अंत में तीर्थराज के शरण में प्राप्त होंगे ।

गंगाजल पीने का गुण हारीत संहितायां ।

तद्धारयेद्बुद्धिमान्बल्यंमेध्यंरसायनम् । श्रमक्लमपिपासा-घ्नंकण्डूदोष निवारणम् ॥ ५२ ॥ लघुमूर्च्छातृषाच्छर्दिमूत्र स्तम्भविनाशनम् । गंगोदकस्यवृष्टिः स्याद्दिवसे वा प्र-दृश्यते ॥ ५३

बुद्धिमान मनुष्य गंगा जल धारण करै यह बल में हित है पवित्र है रसायन है और ग्लानि, परिश्रम, प्यास, इन्हों को हरता है खाज के दोष को दूर करता है । हलका है और मूर्च्छा तृषा छर्दि मूत्रस्तम्भ इन्हों को नाश करता है अथवा सूर्य के दीखते हुए जो बर्षता है वह गंगा पानी है ॥

स्नान बिधिः ।

फलपुष्पादिसामग्रीं गृहीत्वाथतटंगतः । पुनः प्रणम्यसाष्टाङ्गं त्रिवेणीप्रार्थयेत्ततः ॥ १

स्नान करने वाला गंगा जी को देखतेही साष्टांग प्रणाम करे अनंतर फल फूल आदि भेट लेकर गंगातट जाकर अर्पण करके पुनः प्रणाम कर ध्यान करके प्रार्थना करे ॥

ध्यान

वेणीं ध्यायेत्त्रिवर्णां सितहरितलसत् रक्तवस्त्रांत्रिनेत्रां दोर्भिःशङ्खाब्ज चक्रक्रमधृतसुगदाश्वेतपद्मासनस्थां बालांभालेन दुमालंकृत धृतमुकुटां ब्रह्मरुन्द्रे न्द्र बंद्यां स्नाने कालत्रयेयःस्मरतिसहिपुमान्भुक्तिमुक्ती लभेत् ॥

प्रार्थना ।

गंगेदेविनमस्तुभ्यंशिवचूड़ाबिराजते । शरणत्राहिसुपद्मे त्राहिमांशरणागतं ॥ ३ इन्द्रनीलोत्पलाकारङ्गलकन्येयशस्विनि । सर्ब देवस्तुतेमातर्यमुनेत्वांनमाम्यहं ॥ ४ प्रजापति मुखोद्भूतेप्रणतार्ति प्रभंजिनि । प्रयागमिलितेदेविसरस्वतिनमोस्तुते ५ त्रिवर्णेत्र्यम्बके देवित्रिविधाघविनाशिनि । त्रिमार्गेत्रिगुणेत्राहि त्रिवेणिशरणागतं ॥ ६ जठरेखिलमाधायत्वयिस्वपितिमाधवः कृत्वामुखाम्बुजेपादंनमोक्षय्यवटायते ॥ ७ नीलजीमूतसंकाशपीतकौशेयभूषित । प्रयागनिलयस्वामिन्वेणीमाधवतेनमः ॥ ८ शङ्खचक्रगदापद्म विभूषितचतुर्भुज । चतुर्वर्गफलाधारवेणीमाधवतेनमः ॥ ९

इसप्रकार प्रार्थना करके हाथपाव धोयडाले मुखधोकर दो आचमन करे पश्चात् गंगादि को कुश, चंदन,अक्षत, फूल, फल सहित अंजलीवा अर्घा से जल ले अर्घ्य देवे अभाव में केवल जल ही से अर्घ्य देवे ।

विधातृकनकोद्भूतेभागीरथ्यघनाशिनि । त्रैलोक्यबंदिते देविगृहाणार्घ्यंनमोस्तुते ॥ १० गभस्तितनयेदेवियमुनेत्वं

महानदि । ऋषिसिद्धसुरैर्जुष्टेगृहणार्घ्यंनमोस्तुते ॥ ११ विरंचिकन्यकेदेविब्रह्मरंध्रकृतालये । सरस्वतिजगन्मातगृंहाणार्घ्यंनमोस्तुते ॥ १२ एकार्णवेमहाकल्पेसुषुप्त्यैमाधवेप्रभो । पर्यंकवटराजत्वंगृहणार्घ्यंनमोस्तुते ॥ १२ वेणीमाधवसर्बज्ञभक्तेप्सितफलप्रद । सफलांकुरुमेयात्रां गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ॥ १४

इस प्रकार अर्घ्य देके आचमन करके स्नान करे और महा प्रायश्चित्त का संकल्प करना हो तो संकल्प करके स्नान करे अनंतर संध्या बन्दनादि कर्म करके क्षौर का संकल्प कर क्षौर करावे पश्चात् क्षौर कर्ता को द्रव्यादि दे स्नान करे पुनः आचमन करके संकल्प कर भस्म, गोमय, मृतिकादि से मन्त्र सहित स्नान करे अनन्तर वित्तानुसार उक्त प्रमाण से दान देवे ऐसी बिधि है ।

यदि महासङ्कल्प नहीं करना है अथवा नित्यस्नान के क्रम से स्नान करना है तो इस प्रकार सङ्कल्प करे । यथा

प्रथम क्षौर कराने का संकल्प ।

आद्येत्यादिआत्मनः शुद्धिकामनयासर्वेषांस्वपितृणाम्मुक्तयेत्रिवेणीतीर समीपे केशमूलकृतावा ससर्वाघनाशनम् प्रायश्चित्त निदानमात्मनः क्षौर कर्माहंकरिष्ये ।

स्नान संकल्पः ।

ओं तत्सत् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्योनमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमायअद्य ब्रह्मणोद्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पेवैवस्वतमन्वंतरे अष्टाबिंशतितमेयुगेकलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे श्रीविष्णुप्रजापति क्षेत्रे षट् कूल मध्ये बदरी बने अन्तर्वेद्यां ललितासिद्ध पीठे अक्षयबटे श्रीमत्प्रयागे महातीर्थे वौद्धावतारेबिक्रमशके ऽमुकनामसंवत्सरे ऽमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे ऽमुकतिथौ अमुकबासरा-

न्वितायां यथान्नक्षत्रयोगवारांशकलग्न मुहूर्त कर्णान्वितायां अमुकायने अमुकराशिस्थितेसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ अन्येषुग्रहेषुयथा यथा स्थानेषु श्रुतिस्मृति पुराणोक्तशुभ पुण्यफल प्राप्तिकामः अद्य अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक शर्मा वा वर्मा वा गुप्तः वा दासः। ममइहजन्मनिजन्मान्तरे वाकायिकवाचिक मानसिक सांसर्गिक ज्ञाताज्ञात स्पर्शास्पर्श भुक्ताभुक्त पीतापीतादि सकलपातक निरास पूर्वक मासन भोजन शयन गमनादिष्वनृतभाषणादि दोषनिरास द्वाराश्रीपरमे श्वरप्रीत्यर्थं गंगा यमुनयोस्सङ्गमे त्रिवेणीस्नानमहंकरिष्ये।

संकल्प करके हाथ जोड़े यथा

त्वंराजासर्बतीर्थानां त्वमेवजगतःपिता। याचितंदेहिमे तीर्थं सर्बपापैः प्रमुच्यते॥ अपामधिपतिस्त्वंचतीर्थेषुवसतिस्तव बरुणायनमस्तुभ्यं स्नानानुज्ञांप्रयच्छमे॥

अनन्तर जल में हाथ ऊंधा कर (न्युब्जाञ्जलि) आगे लिखे हुए मन्त्र को बोले। यथा

ओं उरु ᳪं हिराजाब्रुरुणश्चकार सूर्य्याय पन्थामन्न्वेतवाऽउ। अपदेपादाप्प्रतिधातवेकरुताप बक्ताहृदयाव्विधश्चित्। नमोव्वरुणायाभिष्ठितोव्वरुणस्यपाशः॥ १

अनन्तर आगे लिखे हुए मन्त्र से दहिने हाथ से जल को तीन बार फिरावे (भ्रामयेत्)।

ओं येतेशतंव्वरुणये सहस्रं यज्ञियाः पाशावितता महान्तः। तेभिर्नो अद्यसवितोत्तव्विष्णुर्व्विश्वेमुञ्चन्तुमरुतःस्वर्क्काः॥ २

अनन्तर मृत्तिका लेके तीन भाग करे दोभागबाएं हाथ में रख के तीसरा भाग दहिने हाथ में लेके नाभि और कमर (कटि) तक में लगावे पुनः दहिना धोके आचमन कर दूसरा भाग बाएंहाथ से लेके गुदा, लिङ्ग, जङ्घा पांव हाथ अर्थात् कमर के नीचे सब जगह लगावे पुनः हाथ धोके आचमन करे अनन्तर आगे लिखे हुए मन्त्र को बोलता हुआ तीसरे भाग को

ललाटादि अंगों में अर्थात् शिर नाक गर्दन छाती पीठ आदि नाभि तक लगावे ॥

ओं इदम्बिष्णुर्व्विचक्रमेत्रेधानिदधे पदम् समूढमस्यपा ᳪ सुरेस्वाहा ॥ ३

अनन्तर हाथ धोके आचमन कर तीर्थ की प्रार्थना करे । यथा

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते बिष्णुक्रान्तेवसुन्धरे उद्धृतासिबराहेण कृष्णेन शतबाहुना । मृत्तिकेब्रह्म पूतासि काश्यपेनाभिबन्दिता त्वयाहतेन पापेन गच्छामिपरमां गतिम् मृत्तिके हरमे पापं यन्मया दुष्कृतम् कृतम् ॥

इस प्रकार प्रार्थना करके नाभि मात्र जल में खड़ा होके सूर्य की ओर मुख करके आगे लिखे हुए मन्त्र से स्नान करे । यथा

ओं आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नोघृतप्वः पुनन्तुव्विश्व ᳪ हिरिप्प्रम्प्रवहन्तिदेवीः ॥ ४

पुनः आगे लिखे हुए मन्त्र से डुबकी लगावे ॥

ओंउदिदाव्यः शुचिरापूतऽएमि ॥ ५

अनन्तर आचमन कर गोमय हाथ में ले आगे लिखे हुए वाक्य को बोले ।

अग्रमग्रचरन्तीनामोषधीनां वनेबने । तासां वृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम् । तन्मेरोगांश्चशोकांश्च पापंमेहर गोमय ।

अनन्तर आगे लिखे हुए मन्त्र को बोलता हुआ सब अङ्गों में लगाके स्नान करे ।

ओंमानस्तोकेतनयेमानऽआयुषि मानोगोषु मानो ऽअश्वे षुरीरिषः मानोव्वीरान्नुद्रभामिनो ब्बधीर्हबिष्मन्तः सदमित्वाहवामहे ॥ ७

पुनः आचमन कर भस्म लें आगे लिखे हुए मन्त्र से सब अङ्गों में लेपन करे ॥

ओं अग्निरिति भस्म वायुरितिभस्म जलमितिभस्मस्थ-

लमिति भस्म व्योमेतिभस्म सर्वं ᳪं हवाइदम्भस्म मन एतानिचक्षूᳪंषिभस्मानीति ॥ ८

ओं प्रसद्य भस्मनायोनि मपश्चपृथिवी मग्ग्ने । स ᳪं सृजज्यमातृ भिष्ट्वं ज्योतिष्म्मान्पुनरासदः ७

पश्चात् भस्म लगे हुए शरीर में आगे लिखे हुए मन्त्रों से कुश से सर्वांग में मार्जन करे ॥ जिसको मृत्तिका गोमय भस्म की विधि से स्नान करना हो या नित्य स्नान वाले ने सङ्कल्प कर स्नान के क्रम से स्नान कर आगे लिखे हुए मन्त्रों से सर्वांग में मार्जन करे । यथा

मन्त्राः ॥ ओं इमम्मे व्वरुण श्रुधीहवमद्द्याचमृडय । त्वामवस्यु राचके ॥ १ ओं तत्त्वायामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्त दाशास्ते यजमानोहविर्भिः । अहेडमानो व्वरुणेहवोद्ध्युरुश ᳪं समानऽआयुःप्प्रमोषीः २ ओं त्वन्नोऽअग्ग्नेव्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठोव्वह्निहतमः शोशुचानोव्विश्वाद्द्वेषांᳪंसिप्प्रमुमुग्ध्यस्म्मत् ॥ १ ओं सत्व न्नोऽअग्ग्नेवमोभवोतीनेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोव्व्युष्टौ । अवयक्ष्वनोव्वरुण ᳪं रराणोवीहि मृडीकᳪं सुहवोनऽएधि ॥ ४ ᳪं मापोमौषधीर्हिᳪं सीर्द्धाम्मोधाम्नो राजंस्ततोव्वरुणनो मुञ्च ॥ ५ उदुत्तमम् । व्वरुणᳪंपाशमस्म्मदवाधमम् विमध्यमᳪं श्रथाय । अथावयमादित्य व्व्रते तवा नागसोऽअदितयेस्याम ॥ ६ ओं मुञ्चन्तुमाशपत्थ्यादथो व्वरुण्यादुत अथो यमस्य पड्वीशात्सर्वस्म्माद्देवकिल्बिषात् ॥ ७ ओं अवभृथनिचुम्पुणनिचेरुरसिनिचुम्पुणः । अवदेवैर्द्देवकृतमेनोयासि षमव मर्त्यैर्म्मर्त्यकृतम्पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि

अनन्तर किसी से भाषण न करता हुआ स्नान करे पुनः आचमन कर तीन कुश ले नाभि के दहिने पार्श्व (कुक्षि-कोखा) से मार्जन करता हुआ शिर पर से बाएं कुक्षि तक आगे लिखे हुये मन्त्रो से करे ॥

मन्त्राः ॥ ओं आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जे दधातन । महेरणायचक्षसे ॥ ९ ओं योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयते

हनः । उशतीरिवमातरः ॥ १० ओं तस्म्माऽअरङ्गमामवो यस्य क्षयायजिन्वथ । आपोजनयथाचनः ॥ ११ ओं इद मापः प्प्रवहतावद्यञ्चमलञ्चयत् । यच्चाभितुद्द्रोहा नृतंय्यच्च शेपेऽअभीरुणम् आपो मातस्म्मादेनसः पवमानश्चमुञ्चतु ॥ १२ ओं हविष्म्मतीरिमाऽआपो हविष्म्मांऽआविवासति हविष्म्मान्देवोऽअद्ध्वरो हविष्म्मांऽअस्तुसूर्य्यः ॥ १३ ओं देवीरापोऽअपान्नपाद्योवऽऊर्म्मिर्हविष्य्यऽइन्द्रियावान्मदिन्तमः । तन्देवेब्भ्योदेवत्त्रादतशुक्रपेब्भ्योयेषाम्भागस्त्थस्वाहा १४ ओं कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽउन्नयामि समापोऽअद्भिरग्ग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ १५ ओं आपोदेवा मधुमतीरगृब्भ्णन्नूर्ज्जस्वती राजस्वश्चितानाः । याभिर्म्मित्रावरुणा वब्भ्यषिञ्च न्याभिरिन्द्रमनयन्नत्यरातीः ॥ १६ ओं द्रुपदादिवमुमुचानः स्विन्नःस्नातो मलादिव । पूतम्पवित्त्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तुमैनसः ॥ १७ ओं शन्नोदेवी रभिष्टयऽआपोभवन्तु पीतये । शंय्योरभिस्स्रवन्तुनः ॥ १८ ओं अपाꣳरसमुद्वयसꣳ सूर्य्येसन्तꣳ समाहितम् । अपाꣳ रसस्ययोरसस्तंव्वोगृह्णाम्म्युत्तम मुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्त्वा जुष्टंगृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम् ॥ १९ ओं अपोदेवी रुपसृजमधुमतीरयक्ष्मा यप्प्रजाब्भ्यः । तासामास्त्था नादुज्जि हतामोषधयः सुपिप्पलाः २० ओं पुनन्तुमापितरः सोम्म्यासः पुनन्तुमापितामहाः पुनन्तुप्प्रपिता महाः । पवित्त्रेणशतायुषा ॥ २१ ओं पुनन्तुमापितामहाः पुनन्तुप्प्रपितामहाः पवित्त्रेणशतायुषाव्विश्श्वमायुर्व्यश्नवै ॥ २२ ओंअग्नऽआयूꣳषिपवसऽआसुवोर्ज्जमिषञ्चनः । आरेबाधस्स्वदुच्छुनाम् ॥ २३ ओं पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः । पुनन्तुव्विश्श्वा

भूतानिजातवेदः पुनीहिमा ॥ २४ ओं पवित्रेणपुनीहिमा शुक्रेणदेवदीद्यत् । अग्नेक्रत्वाक्रतूँऽरनु ॥ २५ ओं यतेपवित्र-मर्च्चिष्यग्नेर्व्विततमन्तरा । ब्रह्मतेनपुनातुमा ॥ २६ ओं पवमानः सोऽअद्यनः पवित्रेणव्विचर्षणिः । यःऽपोतासपुना-तुमा ॥ २७ ओं उभाब्भ्यान्देवसवितः पवित्रेणसवेनच । माम्पुनीहिव्विश्श्वतः ॥ २७ ओं व्वैश्श्व देवीपुनती देव्व्या गाद्यस्यामिमाबह्वयस्तन्वोव्वीतपृष्ठाः । तयामदन्तः सधमा-देषुव्वयंꣳस्यामपतयोरणीयाम् ॥ २९

ऊपर लिखे हुए मन्त्रों से मार्जन करके जल को स्पर्श करे अनंतर आगे लिखे मंत्र से नाभि के ऊपर मार्जन करे ॥

ओं चित्पतिर्म्मापुनातुदेवोमासवितापुनात्वच्छिद्रेण प-वित्रेण सूर्य्यस्यरश्मिभिः । तस्यतेपवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामःपुनेतच्छकेयम् ॥ ३०

अनंतर आगे लिखे मन्त्र से नाभि के नीचे मार्जन करे ॥

ओं वाक्पतिर्म्मापुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्यरश्मि-भिः । तस्यते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छ केयम् ॥ ३१

अनंतर आगे लिखे मंत्र से सर्वाङ्ग में मार्जन करे ॥

मा/ ओं देवो[illegible]सवितापुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मि-भिः । तस्यतेपवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छ-केयम् ॥ ३२

अनंतर आगे लिखेहुए मंत्रों से शरीर पर मार्जन करे ॥ मंत्रो की सूचनिका मात्र है क्योंकि ये मंत्र ऊपर लिखे गये हैं ॥

ओं पुनातु । इमम्मेव० ॥ ओं भूःपुनातु । तत्वायामि० ॥ ओं भुवःपुनातु । त्वन्नोऽअग्ने० ॥ ओं स्वःपुनातु । सत्वन्नो-ऽअग्ने० ॥ ओं महःपुनातु । मापोमौषधी० ॥ ओं जनःपुनातु । उदुत्तमम्वरुण० ॥ ओं तपःपुनातु । मुञ्चन्तुमाशपथ्या० ॥

ओं सत्यंपुनातु। अवभृथनिपुम्पुण०॥ ओं तत्सवितुर्वरेण्यं। सर्वंपुनातु ॥

इस प्रकार मार्जन करके पुनः स्नान (डुबकी-गोता लगावे) करे। जल के अन्दर डूबा हुआ ओं द्रुपदादिवमुमु० अथवा ऋतंच-सत्यं० मंत्र को तीन बार पढ़े। इस से सब पापें का नाश होता है।

अनंतर आचमन कर शिखा में ग्रन्थि लगावे स्नानाङ्ग तर्पण करे तीन कुश ले अभाव में तुलसी दल वा जल ही से पूर्व दिशा में एक २ अंजली आगे लिखे हुए क्रम से देव तीर्थ से देवे॥

ओं ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम्। ओं भूर्देवास्तृप्यन्ताम्। ओं भुवर्देवास्तृ० ओं स्वर्देवास्तृ०। ओं भूर्भुवः स्वर्देवास्तृप्यन्ताम्॥

अनंतर उत्तर दिशा में जनेऊ को माला की तरह करके प्रजापति तीर्थ (कनिष्ठिका का मूल स्थान) से दो दो अंजली ऋषियें को देवे॥

ओं सनकादिद्वैपायनादयो ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ओं भूर्ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ओं भुवर्ऋषयस्तृ०। ओं स्वर्ऋषयस्तृ०। ओंभूर्भुवःस्वर्ऋषयस्तृ०।

अनंतर जनेऊ अपसव्य कर (दहिने कांधे पर करके) दक्षिण दिशा में पितृ तीर्थ (तर्जनी, अंगुष्ठ के मूलस्थान का मध्यभाग) से तीन तीन अंजली पितरें को देवे॥

ओं कव्यवाडनलादयः पितरस्तृप्यन्ताम्। ओं भूः पितरस्तृप्यन्ताम्। ओं भुवःपितरस्तृ०। ओं स्वःपितरस्तृ०। ओं भूर्भुवः स्वः पितरस्तृप्यन्ताम्॥

इस प्रकार तर्पण करके सव्य हो आचमन कर एक अंजली जल आगे लिखे वाक्य से तिल मिश्रित वा केवल जल ही से तीर्थ के तट पर छोड़े।

इस से यह अभिप्राय है कि स्नान करने से जो शरीर का मल तीर्थ जल में गिर पड़ा (धोया गया) इसके प्रायश्चितार्थ यह यक्ष्म तर्पण है।

यन्यादूषितंतोयंशारीर मलसंभवात् । तस्यपापस्यशुद्ध्यर्थं यक्ष्मैततेतिलोदकम् ॥

अनंतर दहिने भाग की शिखा को आगे लिखित वाक्य से निचोवे ।

लतागुल्मेषुवृक्षेषु पितरोयेव्यवस्थिता: तेसर्वे प्रिमायान्तु मयोत्सृष्टै:शिखोदकै: ।

इसके उपरांत सूखा वस्त्र पहिन कर भस्मादि धारण कर संध्यादि कर्म करना हो तो करे अनंतर बित्तानुसार ब्राह्मण को दान देवे ।

स्नान करते समय शिखा के गांठ को न छोड़ देवे स्नानांत में वा उक्त कर्मों में आचमन कर बंधन करे ॥ स्नान करके चलते समय आगे लिखे हुए वाक्य को बोले ॥

मन्त्र तन्त्र क्रिया हीनं पूजनंयन्मया कृतम् । सफलंकुरु तत्सर्वंत्रिवेणिजगदम्बिके ॥ १ यथाशक्तियथाज्ञान कृतं पूजन कर्मयत् । प्रीयेतांते नमे देवौ त्रिवेणीमाधवौ सदा ॥ २ ॥

इति साधारण स्नान बिधि: ।

त्रिवेणि स्तोत्रम् ।

शेषउवाच ॥ पुरा कल्पापायेभगवति शयाने बटपुटेयदा-सर्वान्लोकान् जठर पिठरेसंहृतवति-तदाक्षेत्रं वेणीजयति जगदीशस्यवसति: प्रयागेब्रह्माण्डेनहिसमगुणा ऽन्याबि-जयते॥ १ त्रिकूटादुद्भूतात्रिगुण रचिता त्र्यक्षरमयी-त्रिधा मात्राभूत्वात्रिबिधपथगात्र्यम्बकवती त्रिवेणीनिश्रेणी हरि चरण सान्निध्यजननी-पुनंतीत्रैलोक्यं त्रिभुवन विभूषा बि-जयते ॥ २ वेणींध्याये त्रिवर्णां सितहरित लसत् रक्तवस्त्रां त्रिनेत्रांदोर्भि: शंखाब्ज चक्रक्रमधृतसुगदां श्वेत पद्मा सनस्थां बालाम्भालेन्दु मालांकृत धृतमुकुटां ब्रह्मरुद्रेन्द्र बंद्यांस्नानेकाल त्रयेय:स्मरति सहिपुमान्भुक्तिमुक्तीलभेत ३

ब्रह्मरुद्रेन्द्रनमिते सर्वसिद्धि सुसेविते। त्रिकूटमिलिते मा-
तर्नमोवेण्यैनमोनमः ॥ ४ गंगायमुनयोर्मध्ये गोचरसंधि
बंधुरे। अक्षय्यमोक्षलतिकेतुभ्यम्बेण्यैनमोनमः ॥ ५ प्र-
यागतीर्थराजस्य करपल्लवमालिके। अक्षय्याक्षर जाप्यस्य
बिधानफलदेनमः ॥ ६ धर्मार्थकाममोक्षाणां भूमिकेभुवि
विश्रुते। वेणीत्वाम्पाहिमांसाक्षा द्दृष्टेस्पृष्टेऽवगाहिते ॥ ७
सर्वागमेषुविख्याते सर्वतीर्थवरप्रदे। जीवानांकल्पलतिके
वेणी मातर्नमोनमः ॥ ८ त्वंमोक्षलक्ष्मीस्त्वमति प्रभासि
त्वंब्रह्मनाड़ीचरनाडिगाऽसि। त्वंब्रह्ममायासि बिचित्रगा-
सिप्रत्यक्षरूपासिनमोनमस्ते ॥ ९ इतिशेषेणमुनयः सनका-
दिभ्यईरितं। स्तोत्रंदिवाऽथवानक्तंपठनात्सर्बकामदं॥ १०
पठितव्यं पठितव्यं पठितव्यं पुनः पुनः। सर्बसिद्धिकरंनृणां
नाख्येयंयस्यकस्यचित् ॥ ११

इति त्रिवेणी स्तोत्रम्।

श्री माधवस्तोत्रम्।

इन्द्र उवाच ॥ जयश्यामलसर्बाङ्ग जयलावण्यसागर। जय
सर्बगुणोदार जयमाधव माधव ॥ १ जयकंदर्पदर्पघ्नजय
लक्ष्मीशभूषण। जयप्रणतभूपाल जयमाधव माधव ॥ २
जय गोबिन्दगोपाल जयदुष्टनिवर्हण। जयभूतेशदेवेश
जयमाधवमाधव ॥ ३ जयकृष्णमहाबिष्णो जयनाराय-
णाच्युत। जयानंतहृषीकेश जयमाधवमाधव ॥ ४ जययज्ञ-
पतेदेव जयबैकुण्ठबामन। जयभक्तमहोदार जय मा० ॥ ५
जयसर्बेश्वरानंद जयलोकगुरोहर। जयशङ्खगदापाणे जय
मा० ॥ ६ जययोगेशय ज्ञेश जययोग बिभूषण। जययोगि-
मनोबास जयमा० ॥ ७ जयसर्बसुराध्यक्ष जयसर्बसुरार्चितः।

जय सर्बगुणातीत जयमा० ॥ ८ जयनित्यनिराधार जयबिश्वम्भरायच । जयकोटयर्कसंकाश जय मा० ॥ ९ जय नाथकृपासिन्धो जयभक्तार्तिभंजन । जयसंसारसारांश जयमा० ॥ १० जयसर्बज्ञसर्बात्मञ्जयशंकरशाश्वत । जय मायापतेमायिञ्जयमा० ॥ ११ जयभूतपतेनाथ जयभूतविभावन । जयभूतेश भूतादे जयमा० ॥ १२ संसार बनदावाग्ने जन्ममृत्युजरापह । समस्तभुवनाधार जयमा० ॥ १३ अंतर्वहिश्चसर्बत्र जयमाधवमाधव । निर्बिकारनिराकार जयमा० ॥ १४ सप्तपातालविवरे जयमा० । आद्यंतमध्य रहित जयमाधवमाधव ॥ १५

इति माधव स्तोत्रम् ।

अर्द्धोदययोग ।

माघमायांयदाविप्राः पातश्रवणभानवः । अर्द्धोदयइति प्रोक्तोयोगःपरमदुर्ल्लभः ॥ दिवैवयोगशस्तोयं नरात्रौनच सन्ध्ययोः । कोटिसूर्यग्रहैस्तुल्यईषन्न्यूनोमहोदयः ॥ अमाश्रवणपातानामादि मध्यांत्यनाडिकाः । भानौभानूदयेवैस्युर्मुख्योह्यर्द्धोदयस्त्वसौ ॥ प्रयागेतुप्रशस्तोयंयोगः पुण्यैरवाप्यते । तत्रस्नानंहुतंजप्तंदत्तंकोटिगुणंभवेत् ॥

हेब्राह्मणो माघ महीने की अमावस्या के दिन जब व्यतीपात योग श्रवण नक्षत्र, और रबीवार (इतवार) पड़ेतो परम दुर्लभ अर्द्धोदय नाम योग होता है । यह योग दिन में ही पड़ने से शुभदायक होता है न रात्रि में औरन दोनो संध्याओं में । यह योग करोड़ सूर्य ग्रहण के समान स्नानादिक में पुण्यदायक है । यदि सब योग नहीं कुछ कम हों अर्थात उक्त तिथि, नक्षत्र, योग बार में से एकाध कम हो तो "महोदय" नाम योग होता है यह भी पुण्य दायक है ॥

अमावस्या की आदि घड़ी श्रवण नक्षत्र की मध्य घड़ी और व्यतीपात की अंत की घड़ी इतवार के दिन सूर्योदय में पाई जाय तो वही

सुखय अर्द्धोदय योग है ॥ वह उत्तमयोग श्री प्रयागराज में बड़े पुण्यों से मिलता है ऐसा पर्वकाल आने पर स्नान, होम, जप और दान करने से करोड़ गुणा अधिक पुण्य होता है ॥

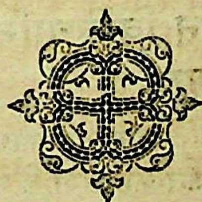
महाबारुणी योग ।

बरुणेनसमायुक्ता मधौकृष्णा त्रयोदशी। गङ्गायांयदिलभ्येत सूर्यग्रहशतैःसमाः॥ १ शुभयोगसमायुक्ता शनौशतभिषा यदि। महामहेतिविख्यातंत्रिकोटि कुलमुद्धरेत् ॥ ३

चैत्र महीना कृष्णपक्ष त्रयोदशी (तेरस) तिथि को शतभिषा नक्षत्र होने से बारुणी योग होता है इसयोग में गङ्गा स्नान करने से सौ सूर्य ग्रहण के समान फल मिलता है। और चैत्र कृष्ण त्रयोदशी शतभिषा नक्षत्र शुभयोग शनिबार के दिन यह सब एकट्ठा होने से महाबारुणी योग होता है इस योग में गङ्गा स्नान करने से तीन करोड़ कुल तर जाते हैं ॥

अमावस्यातिसोमेन सप्तमीभानुनासह । चतुर्थीभूमिपुत्रेण सोमपुत्रेणचाष्टमी ॥ १ चतस्त्रःतिथयः त्वेताः सूर्यग्रहणसन्निभाः। स्नानंदानं तथाश्राद्धं सर्वं तत्राक्षयंभवेत् ॥ २

अमावस्या सोमबार को पड़े, सप्तमी इतवार को पड़े, चौथ मंगल को पड़े, और अष्टमी बुधबार को पड़े तो ये चारों तिथियां सूर्यग्रहण के समान हैं इस पर्व में स्नान, दान और श्राद्ध करने से अक्षय फल होता है ॥



पार्थिवार्चनम् ।

नमःशिवायशाम्बायसगणाय ससूनवे । सनंदिनेसगंगाय सवृषायनमोनमः ॥ नमःशिवाभ्यांनवयौवनाभ्यां परस्परा श्लिष्टवपुर्धराभ्यां । नगेन्द्र कन्या बृषकेतनाभ्यांनमोनमः शंकर पार्वतीभ्यां ॥

पार्थिव माहात्म्यम् ।

(रुद्रया० डामर तंत्रे)

कृतेमणिमयंलिंगं त्रेतायांहेमसम्भवम् ॥ द्वापरेपारदंश्रेष्टं पार्थिवंतुकलौयुगे ॥

सत्युग में मणिमय लिङ्ग के पूजने का माहात्म्य था त्रेता में सुवर्ण का, द्वापर में पारे का और कलि में केवल पार्थिव लिङ्ग का माहात्म श्रेष्ठ है ॥

यथासर्बेषुदेवेषुज्येष्ठःश्रेष्ठो महेश्वरः । एवंसर्बेषुलिंगेषु पार्थिवंलिङ्गमुत्तमम् ॥ यथानदीषुसर्बासुज्येष्ठाश्रेष्ठासरिद्वरा । तथासर्बेषुलिंगेषु पार्थिवंश्रेष्ठ मुच्यते ॥

जैसे सब देवों में बड़े और श्रेष्ठ महादेव हैं ऐसेही सब लिङ्गों में पार्थिव लिंग उत्तम है ॥ जैसे सब नदियों में बड़ी और श्रेष्ठ गंगा जी हैं ऐसेही लिंगों में पार्थिव लिंग उत्तम है ॥ और जैसा मंत्रों में ओंकार सब से श्रेष्ठ है ऐसा सब में पार्थिव पूजन श्रेष्ठ है ।

बिनालिङ्गार्चनंयस्य कालोगच्छति नित्यशः । महाहानिर्भवेत्तस्यदुर्वृत्तस्यदुरात्मनः ।

जिसका समय बिना लिंगार्चन (शिवपूजन) के नित्य दिन बीतता है उस दुष्ट आचरणी नेष्ट बुद्धि वालेकी बड़ी हानि होती है ॥

एकतःसर्बदानानिब्रतानि विविधानिच । तीर्थानि नियमा यज्ञा लिङ्गार्चाचैकतः स्मृता ॥

एक ओर सब प्रकार के दान नानाप्रकार के ब्रत तीर्थ नियम और यज्ञ और एक ओर पार्थिव पूजन कहागया है अर्थात् पार्थिव पूजन करने वाला उक्त फलों को प्राप्त होता है ॥

कलौलिङ्गार्चनंश्रेष्ठं यथालोकेप्रदृश्यते। तथानास्तीतिनास्तीति शास्त्राणामेषनिश्चयः॥

जैसे कलियुग में पार्थिव पूजन श्रेष्ठ (उत्तम) दीखता है वैसा लोक में कोई साधन श्रेष्ठ नहीं है नहीं है यह सब शास्त्रों का निश्चय है॥

रुद्राक्ष माहात्म्यम्।

(स्कांदे) केवलानपिरुद्राक्षान् यथालाभंविभर्तियः। तंनस्पृशंतिपापानि तमांसीवविभावसुम्॥

जो पुरुष केवल रुद्राक्षों को जितने मिलें धारण (पहिरना) करता है उसे सब पाप ऐसे नहीं स्पर्श करते जैसे अंधकार सूर्य को।

रुद्राक्षमालया जप्तो मन्त्रोनंतफलप्रदः। अरुद्राक्षोजपः पुंसां तावन्मात्रफलप्रदः॥

जो पुरुष बिना रुद्राक्ष की माला जप करते हैं उनको जितनी संख्या जप करते हैं उतनाही फल होता है और जो रुद्राक्ष की माला से जप करते हैं उन्हें अनंत फल होता है।

अरुद्राक्षधरोभूत्वा यत्किंचित्कर्मवैदिकम्। कूर्वन्विप्रस्तु मोहेन निष्फलंभवतिध्रुवम्॥

बिना रुद्राक्ष धारण किये जो कोई वैदिक कर्म करता है वह सब कर्म निष्फल जाता है—इससे लोगों को उचित है कि रुद्राक्ष अवश्य धारण करें॥

भस्म मांहात्म्यम्।

बृहज्जा बालोप निषदीयम्।

येभस्मधारणंत्यक्त्वा कर्मकुर्वन्तिमानवाः। तेषांनास्ति बिनिर्मोक्षः संसाराज्जन्मकोटिभिः॥ धिग्भस्मरहितंभालं धिग्ग्राममशिवालयम्। धिगनीशार्चनंजन्मधिग्विद्यामशिवाश्रयाम्॥

जो मनुष्य बिना भस्म धारण किये कोई कर्म करता है उन को करोड़ों जन्म तक कर्म करने से भी संसार से मुक्ति नहीं है होती। जिस

ललाट में भस्म नहीं लगाहुआ है जिस ग्राम में शिवाला नहीं, जिस जन्म में शिवार्चन नहीं किया और विद्या शिव के आश्रय नहीं अर्थात् जिस पठन पाठन में शिवचर्चा नहीं है इन सबों को धिक्कार है ।

पाद्मे ।

नयंभस्मसमायुक्तो रुद्राक्षान्यस्तुधारयेत् । महापापैरपि-स्पृष्टोमुच्यते नात्रसंशयः ॥

जो अग्निहोत्र (शिवमंत्र वा गायत्री मंत्र से हवन करी हुई भस्म) की भस्म और रुद्राक्ष धारण करता है वह महा पापी होगा तोभी निः-सन्देह मुक्त होजायगा ॥

पार्थिवपूजन विधिः ।

पवित्रता से आसन पर बैठ भस्म रुद्राक्ष धारण कर आचमन करे अनंतर प्रणव से प्राणायाम कर शिव जी को स्मरण करता हुआ साव-धान हो श्रद्धा से आगे लिखे हुये विनियोग न्यासादिक कर्म करे ।

अस्यश्रीपार्थिवेश्वरचिंतामणि विद्यामंत्रस्य निग्रहानुग्रह कर्ताब्रह्माऋषिः कामदुघागायत्री छन्दः श्रीपार्थिवेश्वरो देवता ह्रौं वीजम् श्रीं शक्तिः नमःकीलकं ममाऽभीष्ट सि-द्धयर्थे जपेविनियोगः ॥

शरीर न्यासः ।

ब्रह्माऋषयेनमः- शिरसि- कामदुघागायत्री छन्दसेनमः- मुखे- श्रीपार्थिवेश्वरोदेवतायैनमः- हृदये- ह्रौं वीजायनमः गुह्ये- श्रीं शक्तःयेनमः पादौ- नमः कीलकायनमः- सर्वाङ्गे

करन्यासः ।

ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः सर्वशक्तिशिवाय-अंगुष्ठाभ्यां नमः । ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः सर्वतृप्तशक्ति शिवायतर्जनीभ्यांनमः । ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः नित्यालिप्तशक्तिशिवाय मध्यमाभ्यांनमः । ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः सर्वज्ञानशक्तिशिवाय अनामिकाभ्यां

नमः । ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः नित्यानंदशक्तिशिवाय कनिष्ठिकाभ्यांनमः । ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः अनंत शक्तिशिवाय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यासः ।

ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः सर्वशक्तिशिवाय हृदयाय नमः । ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः सर्वतृप्तशक्तिशिवाय शिरसेस्वाहा । ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः नित्यालिप्तशक्ति शिवाय शिखायैवौषट् । ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः सर्वज्ञानशक्ति शिवाय कवचायहुम् । ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः नित्यानंदशक्तिशिवायनेत्रत्रयायवषट् । ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः अनंतशक्तिशिवाय अस्त्रायफट् ।

इस प्रकार न्यासादि करके हाथ में अक्षत पुष्प ले ध्यान करे यथा।

योयोग्गमायांहृदयेचपुंसां ज्ञानंविधत्ते खिलवस्तुनिष्ठं । तंविश्वनाथं कलिकल्मषघ्नं ध्याये शिवा लिङ्ग मभीष्ट सिद्धिः ॥

आगेलिखे मन्त्र से शुद्ध मृत्तिका बनी हुई लेवे ।

ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः हरायनमः

आगे लिखे हुये मन्त्र से मट्टी को हाथ से मले कङ्कड़ पत्थर तृण जो हों उसको निकालदे ।

ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः महेश्वराय नमः ।

आगेलिखे मन्त्र को पढ़ता हुआ लिंग बना के पात्र में वा हस्त में बिल्वपत्र रख के स्थापन करे अनन्तर लिङ्ग के ऊपर अक्षत रखदे।

ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः शम्भवेनमः ।

अनन्तर अक्षत पुष्प बिल्वपत्र लिङ्ग केऊपर रख दाहिने हाथ की पाचों अंगुलियों को स्पर्श कर आगेलिखे मन्त्रों से प्राण प्रतिष्ठा करे । यथा ॥

ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहम् शिवस्य

इस प्रकार तर्पण करके पुनः पुष्प बिल्वपत्र चढ़ा कर कपूर आरती करे।

अनंतर हाथ में पुष्प ले पुष्पांजली देवे॥

ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः प्रपन्नपारि जाताय स्वाहा।

इस मंत्र से पुष्प चढ़ाके नमस्कार करप्रदक्षिणा करे॥ यथा

वृषंचण्डंवृषंचैवसोमसूत्रम्पुनर्वृषं चण्डं च सोमसूत्रंचपुनश्चण्डंपुनर्वृषम्।

महादेव की प्रदक्षिणा चारों ओर से नहीं होती अर्थात् प्रदक्षिणा करते समय जलेहरी (अर्घा) तक जाके पुनः लौट कर इधर जलेहरी तक आवे अनंतर प्रार्थना (क्षमापन) करे वा स्तोत्रादि का पाठ करके नमः शिवायशाम्बाय० इति

ऊपर लिख आया हूं इसको बोलके ओं पशुपतयेनमः यह बोले पुनः

पार्थिवानाञ्चलिङ्गानां यन्मयापूजनंकृतम्। तेनश्रीभगवान् रुद्रोवांछितार्थप्रदोभव ॥ अज्ञानाद्यदिवाज्ञानाज्जपपूजादिकंमया। कृतंतदस्तुसफलंकृपयातवशंकर ॥ शिवेभक्तिश्शिवे भक्तिश्शिवेभक्तिश्शिवे शिवे। सदाभूयात्सदा भूयात्सदा भूयात्सुनिश्चला ॥

इसप्रकार बोलके गालबजावे (गाल बजाने से डमरू बजाने का फल होता है) पश्चात् बिसर्जन करे।

गच्छगच्छ सुरश्रेष्ठस्वस्थानपरमेश्वर। कैलाशशिखरेगच्छ ममाऽभीष्टचसिद्धिदः॥ ओं महादेवायनमः॥

इस प्रकार बिसर्जन का वाक्यबोल के अक्षत लिङ्ग के ऊपर छोड़ के नमस्कार करे शेष गंधाक्षत पुष्प से आगे लिखे नामों से गणों का पूजन जलेहरी के पास करे। यथा

वाण रावण चण्डीश नन्दि भृङ्गिरटादयः। सदाशिवप्रसादेनसर्वेगृणहन्तुशाम्भवाः॥

और चढ़े हुए पुष्पबिल्वपत्र को ले शिर में लगावे (स्पर्श करे) पश्चात् उस लिङ्ग को जल में प्रवाह करे परन्तु अक्षत पुष्प बिल्वपत्र गिरने न पावे न पांव के नीचे पड़े।

आयु कामना के वास्ते महादेव को दूर्वांकुर चढ़ाना चाहिये जिस धतूर के फूल की दंडी लाल हो वह पुत्र कामना के उपयोगी होता है परन्तु सवा लाख फूल से कम न चढ़ावे तुलसी दल चढ़ाने से भोग और मोक्ष मिलता है "भुक्तिमुक्तिफलंतस्यतुलसी पूजनंचरेत्" मदार के फूल से प्रताप की वृद्धि- कनेर (करवीर) के फूल से रोग का नाश-चमेली के फूल से बाहन मिले- जूही के फूलों से अन्नपूर्णा की दया हो "चंपकं केतकं हित्वाअन्यत्सर्वंशिवार्पयेत्" चंपा और केवड़ा का फूल महादेव को नहीं चढ़ावे शेष सब फूल महादेव को प्रिय हैं। बिल्वपत्र अवश्य चढ़ाना चाहिये यदि ताजा न मिले तो बासी चाहे जितने दिन का हो चढ़ावे प्रवास में बिल्वपत्र का चूर्ण रखना चाहिये जब नहीं मिले तो चूर्ण ही चढ़ादेवे और चढ़ा हुआ भी सात बार धोके चढ़ा देवे परंतु अपना ही पूजा किया हुआ शुद्ध होता है और रक्त कनेर का फूल तीन दिन का बासी चढ़ा सक्ता है धतूर का फूल सोमबार प्रदोष को छोड़ बाकी के दिनों में रात्रि में न चढ़ावे और सोमबार, चौथ, नवमी, चतुर्दशी, अमावश्या, संक्रांति इतने दिनों में बिल्वपत्र अपने हाथ से न तोड़ना चाहिये जिसको नित्य ताजा चढ़ाने का नियम हो उन्हों दूसरे के हाथ से तोड़वा लेना और बिल्वपत्र वज्र सहित अर्थात् बिल्बपत्र में जो डांड़ी रहती है उसके सहित भी और तोड़कर भी चढ़ाने में कुछ दोष नहीं क्योंकि दोनों का प्रमाण है और पार्थिव पूजा करने वाला मृत्तिका में कंकड़ तृण आदि कोई दूसरी बस्तु न रहने देवे क्योंकि कंकड़ी के रहने से शरीर में रोग होजाता है और और मृत्तिका बना के रक्खे तो कोई मृत्तिका को लंघने न पावे।

शिव पूजन के अनंतर यह कीर्तन करे प्रातःकाल वा सायंकाल में अथवा जब इच्छा हो।

प्राणा इह प्राणा । ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः शिवस्यजीव इहस्थितः । ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः शिवस्य सर्वेन्द्रियाणिवाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रजिह्वा प्राणवाक् पाणि पादपायूपस्थानीहैवागत्य सुखंचिरंतिष्ठंतुस्वाहा ॥ ओं मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टं यज्ञ ॥५॥ समिमंदधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ एषवैप्रतिष्ठानाम यज्ञोयत्रैतेन यज्ञेन य जन्ते न सर्वमेव सुप्रतिष्ठितम्भवतु । सुप्रतिष्ठोवरदाभव ॥

अनन्तर अंजली के अन्दर दोनों अंगूठों को कर पुष्प वा अक्षत ले प्रार्थना करे यथा ॥

ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः भगवन्देव देवेशयावत्पूजावसानकम्-तावत्वत्प्रीतिभावेन लिंगेस्मिन्सन्निधोभव ओं शूलपाणये-नमः ।

अनन्तर हाथ जोड़ पुष्प वा अक्षत ले ध्यान करे ॥

ध्यानम् ।

ध्यायेन्नित्यम्महेशंरजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पो ज्वलाङ्गम्परशुमृगवराभीति हस्त प्रसन्नं । पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबंद्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

अनन्तर पाद्यार्घ्य देना है तो आगे लिखे मन्त्र से देवे पाद्य में जल छोड़े । अर्घ्य में जल चन्दन अक्षत पुष्प लेकर छोड़े ।

ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः शिवायनमः पाद्यंसमर्पयामि । ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः भवोद्भवायनमः अर्घ्यम् ॥ ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः वामदेवायनमः-आचमनीयम् । जल छोड़देवे

अनन्तर स्नान करावे ।

ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः ओं पिनाकपाणयेनमः ओं नमः शम्भवा-यचमयो भवायच नमः शंकरायच मयस्करायच नमः शि-वायच शिवतरायच

अनन्तर चन्दन चढ़ावे ।

ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः शिवायनमः

इस मन्त्र से अक्षत, पुष्प बिल्वपत्र दूर्वा धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल सुपारी दक्षिणा आदि सब चढ़ावे । इसमें जो वस्तु नहो उसकी जगह अक्षत चढ़ावे और बिल्वपत्र चढ़ाने में बिल्वाष्टक स्मरण हो तो बोले

(त्रिगुणंत्रिदलाकारंआदि)

अनन्तर चन्दन अक्षत पुष्प बिल्वपत्र ले लिङ्ग के ऊपर आगे लिखे हुए मन्त्रों से छोड़े ।

ओं सर्वायक्षितिमूर्त्तयेनमः॥१ ओं भवायजलमूर्त्तयेनमः ॥२ ओंरुद्रायअग्निमूर्त्तयेनमः॥३ ओं उग्रायवायुमूर्त्त येनमः॥४ ओं भीमायआकाशमूर्त्त येनमः ॥ ५ ओं पशुपतयेयजमान मूर्त्त येनमः॥ ७ ओं महादेवायसोममूर्त्त येनमः ॥ ७ ओं ईशा नायसूर्यमूर्त्त येनमः ॥ ८

इन अष्टमूर्त्तियों को पूजन करके अनन्तर गो दुग्ध चंदन जल अथवा चंदन जल मिलाकर बिल्वपत्र के आधार से तर्पण करे अर्थात लिङ्ग के ऊपर जल छोड़े ।

ओं भवंदेवंतर्पयामि ।. ओं सर्वंदेवंतर्पयामि । ओं ईशानं देवंतर्पयामि- ओं पशुपतिंदेवंतर्पयामि- ओं उग्रं देवंत०-ओं रुद्रं देवंत०- ओं भीमंदेवंत०-ओं महांतंदेवंत० ॥ ओं भवस्य देवस्यपत्नींतर्पयामि० । ओं शर्वस्यदेवस्यपत्नीं तर्पयामि- ओं ईशानस्यदेवस्यपत्नींत०-ओं पशुपतिर्देवस्यप०-ओं उ-ग्रस्यदेवस्यप०-ओं रुद्रस्यदेवस्यप०- ओं भीमस्यदेवस्यप० ओं महतोदेवस्यपत्नींतर्पयामि ॥

इस प्रकार तर्पण करके पुनः पुष्प बिल्वपत्र चढ़ा कर कपूर आरती करे।

अनंतर हाथ में पुष्प ले पुष्पांजली देवे ॥

ओं ह्रौं ह्रीं जूंसः प्रपन्नपारिजाताय स्वाहा।

इस मंत्र से पुष्प चढ़ाके नमस्कार करप्रदक्षिणा करे ॥ यथा

वृषंचण्डंवृषंचैवसोमसूत्रम्पुनर्वृषं चण्डं च सोमसूत्रंचपुनश्चण्डंपुनर्वृषम्।

महादेव की प्रदक्षिणा चारों ओर से नहीं होती अर्थात् प्रदक्षिणा करते समय जलेहरी (अर्घा) तक जाके पुनः लौट कर इधर जलेहरी तक आवे अनंतर प्रार्थना (क्षमापन) करे वा स्तोत्रादि का पाठ करके

नमः शिवायशाम्बाय० इति

ऊपर लिख आया हूं इसको बोलके ओं पशुपतयेनमः यह बोले पुनः

पार्थिवानाञ्चलिङ्गानां यन्मयापूजनंकृतम्। तेनश्रीभगवान् रुद्रोबांछितार्थप्रदोभव ॥ अज्ञानाद्यदिवाज्ञानाज्जपपूजादिकंमया। कृतंतदस्तुसफलंकृपयातवशंकर ॥ शिवेभक्तिश्शिवे भक्तिश्शिवेभक्तिश्शिवे शिवे। सदाभूयात्सदा भूयात्सदा भूयात्सुनिश्चला ॥

इसप्रकार बोलके गालबजावे (गाल बजाने से डमरू बजाने का फल होता है) पश्चात् बिसर्जन करे।

गच्छगच्छ सुरश्रेष्ठस्वस्थानपरमेश्वर। कैलाशशिखरेगच्छ ममाऽभीष्टचसिद्धिदः ॥ ओं महादेवायनमः ॥

इस प्रकार बिसर्जन का बाक्यबोल के अक्षत लिङ्ग के ऊपर छोड़ के नमस्कार करे शेष गंधाक्षत पुष्प से आगे लिखे नामों से गणों का पूजन जलेहरी के पास करे। यथा

वाणरावणचण्डीश नन्दि भृङ्गिरिटादयः। सदाशिवप्रसादेनसर्वेगृण्हन्तुशाम्भवाः ॥

और चढ़े हुए पुष्पबिल्वपत्र को ले शिर में लगावे (स्पर्श करे) पश्चात् उस लिङ्ग को जल में प्रवाह करे परन्तु अक्षत पुष्प बिल्वपत्र गिरने न पावे न पांव के नीचे पड़े।

आयु कामना के वास्ते महादेव को दूर्वांकुर चढ़ाना चाहिये जिस धतूर के फूल की दंडी लाल हो वह पुत्र कामना के उपयोगी होता है परन्तु सवा लाख फूल से कम न चढ़ावे तुलसी दल चढ़ाने से भोग और मोक्ष मिलता है "भुक्तिमुक्तिफलंतस्यतुलसी पूजनंचरेत्" मदार के फूल से प्रताप की वृद्धि-कनेर (करवीर) के फूल से रोग का नाश-चमेली के फूल से वाहन मिले- जूही के फूलों से अन्नपूर्णा की दया हो "चंपकं केतकं हित्वाअन्यत्सर्वंशिवार्पयेत्" चंपा और केवड़ा का फूल महादेव को नहीं चढ़ावे शेष सब फूल महादेव को प्रिय हैं। बिल्वपत्र अवश्य चढ़ाना चाहिये यदि ताजा न मिले तो बासी चाहे जितने दिन का हो चढ़ावे प्रवास में बिल्वपत्र का चूर्ण रखना चाहिये जब नहीं मिले तो चूर्ण ही चढ़ादेवे और चढ़ा हुआ भी सात बार धोके चढ़ा देवे परंतु अपना ही पूजा किया हुआ शुद्ध होता है और रक्त कनेर का फूल तीन दिन का बासी चढ़ा सक्ता है धतूर का फूल सोमबार प्रदोष को छोड़ बाकी के दिनों में रात्रि में न चढ़ावे और सोमबार, चौथ, नवमी, चतुर्दशी, अमावश्या, संक्रांति इतने दिनों में बिल्वपत्र अपने हाथ से न तोड़ना चाहिये जिसको नित्य ताजा चढ़ाने का नियम हो उन्हें दूसरे के हाथ से तोड़वा लेना और बिल्वपत्र वज्र सहित अर्थात् बिल्वपत्र में जो डांड़ी रहती है उसके सहित भी और तोड़कर भी चढ़ाने में कुछ दोष नहीं क्योंकि दोनों का प्रमाण है और पार्थिव पूजा करने वाला मृत्तिका में कंकड़ तृण आदि कोई दूसरी वस्तु न रहने देवे क्योंकि कंकड़ी के रहने से शरीर में रोग होजाता है और और मृत्तिका बना के रक्खे तो कोई मृत्तिका को लंघने न पावे।

शिव पूजन के अनंतर यह कीर्तन करे प्रातःकाल वा सायंकाल में अथवा जब इच्छा हो।

कीर्तन ।

शिव भजले बारम्बारं । दीन दयाल दया करुणाकर भवसागर के तारं ॥ कैलाश शिखर एक दिव्य वाटिका नाना कुसुम प्रकाशं । कल्पद्रुमादि गहन बन शोभित भजले बारम्बारं ॥ १ कोकिल हंस मयूर शुकादिक कूंजत पक्षि अनेकं । कुसुम समूह भृंग बहु गूंजत भजले० ॥ २ मुक्ता विद्रुम रत्न जटित मय शालामणि युतराजं । तन्मध्येशिवशक्ति बिराजत भजले० ॥ ३ हरगौरीपति शिव विश्वम्भर विरूपाक्ष जगपालं । इन्द्रादिक सुरसेवक सेवित भजले० ॥ ४ वाद्यमृदंग सितार झांझ डफ झङ्किनाद धुधकारं । डिमिक डिमिक डम् डमरू बाजे भजले० ॥ ५ चरणे नूपुर रुणुरुणु बोले ताम् ताम् लुप् चुप् तालं । नारद बीणावाद्यंकुरु ते भजले० ॥ ६ ब्रह्मा बिष्णु युत करत आरती चतुर्वेद उच्चारं । सनकादिक ऋषि गान करत हैं भजले० ॥ ताथेइ ताथेइ नृत्य करत हैंकिन्नरादि सुर राजं । देखि रूप सब होत प्रफुल्लित भजले० ॥ ८ नमामि हरहर बम्बम् रुद्रं बिश्वरूप श्रुति पालं । शाम्ब सदा शिव शाम्ब सदा शिव भजले० ॥ ९ चौद भुवन में आप निरंजन व्यापक लिङ्ग स्वरूपं । निरंकालनिर्मल गुण रहितं भजले० ॥ १० मृत्युंजय शित कंठ दयालू बिषधर ज्ञान प्रकाशं । दक्ष यज्ञ परिपूरण शंकर भजले० ॥ ११ जटा जूट गंगा धर शङ्कर चन्द्रभाल मुंडमालं । नील कंठ भस्मांग बिभूषित भजले० ॥ १२ पञ्चानन गिरजाबर स्वामी फणिधर भूषित हारं । त्रिपुरांतक मदनांतक स्वामी भजले० ॥ १३ वृषभध्वज व्याघ्राम्बर शूली कपाल पाणिपिनाकं । नाग पाश डमरू असिधारी भजले० ॥ १४ प्रयाग बलुआघाट किनारे यमुना बहत अपारं । श्री ब्रह्मचारी महाराज निवासं भजले ॥ १६ ब्रह्मचारी यह कीर्तन करते शिवगण भक्तिसमेतं । निज चरणन में चित्त लगावो भजले० ॥ १६ शिव कीर्तन जो प्रतिदिन गावें श्रद्धा युत अति प्रीतं । होय बुद्धि निर्मल गति पावें भजले० ॥ १७ गुणशर अंक इन्दु सम बत्सर बिनय कीन अति प्रीतं । भाद्रमास भृगु शुक्ल पञ्चमी भजले बारम्बारं ॥ १८ शिव भजले बारम्बारं । दीन दयाल दया करुणाकर भवसागर के तारं ॥

इति शिव कीर्तनं ।

इति पार्थिवार्चन विधिः ॥

योगाऽभिलाषी श्री सदाशिव नारायण चैतन्य ब्रह्मचारी

बलुआघाट—प्रयाग